हुसैन अ० और मानव जगत

प्रोफ़ेसर रघुपति सहाय ''फ़िराक़'' गोरखपूरी

प्रिय महोदय,

तसलीम

समयाभाव से आपके कृपा पत्र का उत्तर अब तक न दे सका था। यह कुछ टूटे–फूटे बे–जोड़ वाक्य जो मेरी रूह की गहराइयों से निकले हैं सुपुर्द–ए–कलम कर रहा हूं यानी लिपि बद्ध कर रहा हूं। न जाने क्यों तबीअत की मौज ऐसी ही हुई कि अंग्रज़ी में हज़रत हुसैन[अ०] के मुतअल्लिक लिखूं। आपने लिखा था कि अगर अंग्रज़ी में भी मैंने लिखा तो आप उसका उर्दू में तरजुमा (अनुवाद) करा लेंगे। कोई बोली हो खुलूस और अक़ीदत, (शुद्ध हृदयता और श्रद्धा) की भाषा एक होती है।

मैं इस कामना के साथ यह पत्र समाप्त करता हूं कि अब वक़्त आ गया है कि हम हुसैन[अ०] के मातम से आगे की मन्ज़िल में क़दम रखें और हुसैन[अ०] की शहादत को (बलिदान को) दुनिया को उभारने का सन्देश समझें।

ख़ून शहीद का तेरे, आज है ज़ेबे दास्ताँ
नार–ए–इन्क़िलाब है, मातमे रफ़्तगां नहीं।
(फ़िराक़)

(तेरे शहीद का रक्त, आज कथा की शोभा बना हुआ है परन्तु वास्तव में यह क्रान्ति का नारा है, चले गये हुए लोगों का शोक उद्‌गार नहीं)

आप इस पत्र को चाहें तो छाप सकते हैं। और इसी खत के नीचे मेरे मज़मून का अनुवाद छाप सकते हैं। यह पत्र और लेख लिखते हुए हज़रत हुसैन[अ०] की याद यूं आयी कि जी भर आया।

आपका

रघुपति सहाय फ़िराक़ गोरखपुरी

●●●

हुसैन[अ०] का नाम इस विशाल संसार के करोड़ों इन्सानों के लिए आबे हयात है यानी अमृत जल है। इस्लाम ने मेरी आखें हमेशा अश्क आलूद और सजल कर दी हैं। हुसैन[अ०] की बलन्द और पाकीज़ा सीरत (उच्च और पवित्र आचरण) महसूस किये जाने की (अनुभूमि की) चीज़ है। ऐसे शब्दों का पाना आसान नहीं जो उनके किरदार की अज़मत के मुकम्मल मज़हर हों यानी जो उनके आचरण की महानता के सम्पूर्ण प्रतीक है। यूँ तो उनकी सीरत उनके आचरण रूहानियत और आसुओं की अध्यात्म और आसुओं की सबसे ज़्यादा तेज़ रौशनी में कर्बला के अन्दर चमक दिखाती है लेकिन जो लोग हुसैन[अ०] की ज़िन्दगी से कर्बला में उनकी शहादत वाक़े होने से अवगत हैं उनके लिए इस ज़िन्दगी से बेदाग़ और उस्तवार सुदृढ़ पवित्रता उसकी मानवता, उसकी हृदय शुद्धता और गरिमा सच की विचित्र और कड़ी परीक्षा से मुक़ाबिले की ताक़त, यह बातें इतनी स्पष्ट हैं कि दीन–धर्म के अलगाव–विलगाव के बिना प्रत्येक व्यक्ति से हंसी खुशी श्रद्धा की भेंट पाने की मांग करती है।

ऐसे हीरो रोज़ नहीं पैदा हुआ करते

क्या सिर्फ़ मुसलमान के प्यारे हैं हुसैन
चर्खे नौ–ए–बशर के तारे हैं हुसैन
इंसान को बेदार तो हो लेने दो
हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन
(जोश)

(क्या ऐसा है कि हुसैन[अ०] मात्र मुसलमानों में प्रिय है, नहीं, वह वास्तव में मानव जाति के आकाश पर नक्षत्र समान हैं। मानव जाति को सजग तो हो लेने दो, प्रत्येक जाति पुकारेगी कि हुसैन[अ०] हमारे हैं।)

मुझ सरीखे गुनहगार इन्सान के लिए हुसैन[अ०] के अख़लाक़ी कमालात, (नैतिक कौशल) की सही क़द्र–क़ीमत का अन्दाज़ा लगाना (ठीक मूल्यांकन करना) ग़ालिबन (सम्भवतः) अपनी योग्यता से बढ़कर जुरअत आज़माई (साहस परीक्षा) करना होगा। वह दुनिया के बड़े से बड़े पहुंचे हुए श्रषियों और शहीदों के हम पल्ला समतुल्य हैं। उनका नाम और काम उनकी ज़िन्दगी और मौत के वाक़िए, उन नस्लों की रूहें जगाएंगे जो अभी पैदा नहीं हुई हैं। कोई मर्सिया और कोई सवानेह उम्री उनकी सीरत की अजमतों को नुमायाँ नहीं कर सकती। यानी कोई शोभान्त कविता या जीवनी उनके चरित्र की महानता को प्रज्वलित नहीं कर सकती।

अन्त में सविनय एक सुझाव अपने सुन्नी और शीआ भाइयों के सामने रखना चाहता हूं। और वह यह है कि, दुनिया बदल रही है ख़ून और आग में नहा के एक नई बशरीयत जहूर पज़ीर होगी एक नई मानवता प्रकट होगी जो ज़ात और अक़ीदे की विभिन्नता को ख़त्म कर देगी जो वर्ण और विश्वास के भेद–भाव का अन्त कर देगी। यह नया मानव जगत एक खानदान (एक परिवार) होगा। इमाम हुसैन[अ०] मानव जाति के लिए जिए और मरे। सब मुसलमानों और दूसरे अक़ायद रखने वाले यानी दूसरे मतावलम्बी इन्सानों को हुसैन[अ०] की शहादत से ज़िन्दगी का सबक़ लेना चाहिए। वह हुसैन[अ०] जिनका दिल केवल मुसलमानों के लिए नहीं, सिर्फ अपने परिवार वालों के लिए नहीं, सिर्फ अपने भक्तों के लिए नहीं बल्कि मानव जाति के लिए धड़क रहा था।

आज से हमारा धर्म मानव बिरादरी होना चाहिए।

(फिराक साहब का यह लेख अंग्रेज़ी से उर्दु में रूपान्तरित होकर ''सरफ़राज़'' मोहर्रम नम्बर 1361 हि0 में प्रकाशित हुआ और फिर ''सरफ़राज़'' मोहर्रम नम्बर सन् 1400 हि0 में छपा, वहीं से लेके सम्पादन व्यवस्था ने आपके लिए इसे हिन्दी रूप दिया।)

● ● ●

(पेज नं. 44 का बक़िया....................)

नतीजा निकालने पर मजबूर हो जाते कि अगर यज़ीद पैग़म्बर[स०] का सच्चा खलीफ़ा (उत्तराधिकारी) न होता तो हुसैन[अ०] जैसा पुनीत इंसान हरगिज़–हरगिज़ उसकी बैअत (कुबूल) स्वीकार न करता। यक़ीनन (निश्चय) ही हुसैन[अ०] ने यज़ीद को अपने से अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) समझा तभी तो उसके सामने सिरे इताअत झुका दिया यानी उसके आज्ञा पालन में नत मस्तक हो गये।

ऐसी हालत में यज़ीद का हर काम आम मुसलमानों के लिए काबिले पैरवी व तास्सी होता यानी अनुकरणीय होता और फिर इस्लाम अपने हक़ीक़ी मरकज़ व मुक़ाम से बईद हो जाता यानी इस्लाम अपने वास्तविक केन्द्र बिन्दु और स्थान से दूर जा पड़ता। हुसैन[अ०] ने मुसलमानों को गुमराही व ज़लालत यानी पथभ्रष्ट होने से बचा लिया। खुदा परस्ती (ईश्वर वादिता) पर हुसैन[अ०] का यह सबसे बड़ा एहसान यानी उपकार था। कर्बला की घटना के बाद इब्लीसी और लाहूती किरदार में एक ऐसी हदूदे फ़ासिल तामीर हो गयी यानी आसूरी और ईश्वरवादी आचरण में एक ऐसी सीमा रेखा खिंच गयी जो अब किसी के मिटाने से मिट नहीं सकती।

● ● ●